

उपनयन

तथा

तथा

वेदारम्भ

संस्कार

संस्कार

५.२ व२



विश्वप्रकाश, बी.ए., एम.एल.बी.

उपाध्याय साहित्य

Light of Truth (सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद सजिल्द)	१५'००	हम क्या खावें घास या मांस	२'००
Philosophy of Dayanand	१०'००	आर्यस्मृति	१'७५
मीमांसा प्रदीप	६'००	आर्योदय काव्यम्	
आस्तिकवाद	६'००	(दो भाग) प्रत्येक	१'५०
जीवात्मा	५'००	धर्म—तर्क की कसौटी पर	१'५०
अद्वैतवाद	५'००	कर्म-फल-सिद्धान्त	१'५०
शांकरभाष्यालोचन	५'००	भगवत् कथा	१'५०
जीवन-चक्र	५'००	सनातन धर्म	१'५०
मनुस्मृति	५'००	सर्व-दर्शनसिद्धान्त-संग्रह	१'०५
ऐतरेय ब्राह्मण	५'००	Landmarks of Dayananda's Teachings	१'००
इस्लाम के दीपक	५'००	धर्म-सुधा-सार	०'९०
Vedic Culture	५'००	सत्यार्थ प्रकाश—	
वेद प्रवचन	५'००	एक अध्ययन	०'९०
ट्रैक्टमाला	५'००	राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द	१'००
सायण और दयानन्द	३'००	मूर्ति पूजा	०'७५
कम्युनिज्म	३'००	राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्रसेन, दयानन्द	०'६२
इस्लाम और आर्य समाज	२'००	उपदेश सप्तक	०'४०
संध्या क्या ? क्यों ? कैसे ?	२'००	शंकर, रामानुज, दयानन्द	०'३७
भारतीय पतन और उत्थान की कहानी	२'००	वेद और मानव कल्याण	०'३७
संस्कार प्रकाश	२'००	Svami Dayananda Vedic Philosophy	००'२५
गंगा-ज्ञान-धारा	२'००	कौसे कक्षा (उर्दू काव्य)	२'००
Social Reconstruction by Buddha and Dayananda	२'००		

पता—वैदिक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद—३

ओ३म्

उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार

(महर्षि दयानन्द की 'संस्कार विधि' के अनुसार
परिष्कृत संस्करण)

199/ 4

—:०:—



सम्पादक—

श्री विश्वप्रकाश, बी० ए०, एल-एल० बी०

—:०:—

प्रकाशक—

विजय कुमार

वैदिक प्रकाशन मन्दिर

१३, लखपतराय लेन, इलाहाबाद—३

प्रथमबार]

१९७०

[मू० ४० पैसा

समय

आश्वलायन तथा पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार ब्राह्मण पुत्र का ८ वर्ष में, क्षत्रिय का ११ वर्ष में, वैश्य का १८ वर्ष में उपनयन संस्कार करें।

इस प्रकार ८ और १२ वर्ष की अवस्था में सभी बालक और बालिकाओं का उपनयन संस्कार कर देना चाहिये। बालक की प्रतिभा, बुद्धि तथा शिक्षा पर समय आश्रित है।



आवश्यक वस्तुयें

(१) यज्ञ कुण्ड—यदि भूमि कच्ची हो तो खोद कर कुण्ड बनाया जावे। यदि पक्की हो तो लोहे के कुण्ड का प्रयोग करें। यदि फर्श के बिगड़ने का डर हो तो लोहे की परात में कुण्ड रख लें। परात के नीचे ईंटें लगा लें।

(२) सामग्री के लिये ३ थाली।

(३) घी के लिये एक कटोरा चमचे सहित।

(४) आचमन के लिये ४ गिलास या पंचपात्र या मिट्टी का कुल्हड़।

(५) एक गिलास जल छिड़कने के लिये।

(६) यज्ञशाला के चारों ओर ध्वजा, पताका, पल्लव आदि बाँधे।

(७) कुम्कुम, हल्दी, मैदा की रेखाओं से यज्ञशाला को सुशुषित करें।

(८) घी एक पाव, सामग्री एक सेर—इसी अनुसार।

(९) कपूर आधा तोला।

(१०) हवन के लिये लकड़ियाँ पलाश, पीपल, आम आदि की सूखी और कटी हुई हों।

(११) सामग्री निम्नलिखित वस्तुयें कूटकर बना ले या बाजार से मोल ले ले।

छार छबीला, नागर मोथा, अगर, तगर, बालछड़, कपूर कचरी, चन्दन चूरा, छुआरा, मखाना, गरी का गोला, जायफल,

(४)

बड़ी इलायची, लौंग, किशमिश, बदाम, गिलोय—छटांक छटांक भर । जौ, तिल चावल, नया अन्न ।

इसमें शक्कर या गुड़ मिला लो ।

(१२) एक थाली में हलुवा, खीर या मीठा भात या और कोई मीठी वस्तु रख लो ।

(१३) एक चिमटा, एक पञ्जा, दियासलाई, ४ आसन ऊन के या मूँज के ।

(१४) यज्ञ मण्डप पर चारों ओर ४ कलश वा १ कलश जिस पर घी का दिया जलता हो । मिट्टी के घड़े रंगे हुये काम में लावें । इन पर प्याले में अनाज रक्खें, आम की पत्ती नीचे लगावें । ऊपर दिया जले ।

(१५) बालक के वस्त्र—धोती, लङ्गोट, अङ्गोछा पीला रङ्गा हुआ, जनेऊ ।

(१६) १ तौलिया, परात या बड़ी थाली, पानी से भरा लोटा ।

(१७) मेखला—मूँज, तृण, ऊन वा सन की; खड़ाऊँ, दंड़ा ।

भात बनाना

एक पाव चावल को बीन कर, फटक कर, साफ कर ले । फिर आध घन्टा पानी में भिगो दे । इसके बाद आग पर पका ले । जब अच्छी तरह गल जाय तो थाली में निकाल कर घी, चीनी (शक्कर) मिला ले ।

[१ ली क्रिया—उपवास]

जिस दिन उपनयन कराना हो उससे पूर्व ३ दिन या कम से कम १ दिन का व्रत अवश्य रखे। इस काल में दूध, दही, फल, मिठाई का सेवन किया जा सकता है।

[२ री क्रिया—क्षौर कराना (बाल बनाना)]

जिस दिन बालक का उपनयन कराना हो उस दिन नाई को बुला कर उस्तरे से बाल बनवा देने चाहिये। चोटी को छोड़ कर शेष बाल बनवा दें।

[३ री क्रिया—स्नान]

बालक को स्नान करा दे। यदि शीत अधिक हो तो गरम पानी का प्रयोग कर ले।

[४ थी क्रिया—वस्त्र पहनाना]

वस्त्र जो इस अवसर के लिये बनाये गये उनको पहनाना। वस्त्र पहन कर बालक कुण्ड के पश्चिम ओर पूर्व की ओर मुँह कर के बैठ जावे। पुरोहित तथा ऋत्विज अपने स्थान पर बैठें। सब समान रख लिया जावे।

[५ वीं क्रिया—पुरोहित वरण]

यजमान—ओमावसोः सदने स्त्रीद ।

पुरोहित—ओं सीदामि ।

यजमान—ओं ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे, वाराहकल्पे सप्तमे मन्वन्तरे, वैवस्वते अष्टाविंशतितमे, कलियुगे कलि-प्रथमचरणे अमुकः विक्रमे, अमुक शाके, अमुक दयानन्दाब्दे, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक दिने, अमुक ग्रामे, नगरे वा अमुक गोत्रोत्पन्नः, अमुक नामाहं उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार करणाय भवन्तं वृणो ॥

पुरोहित—वृतोऽस्मि ।

[६ वीं क्रिया—वस्त्र धारण]

बालक :—ब्रह्मचर्यमागाम् , ब्रह्मचार्यसानि ।

आचार्य :—मन्त्र बोल कर बालक को सुन्दर वस्त्र और उपवस्त्र देवे ।

ओं येनेन्द्राय बृहस्पति र्वासः पर्यदधामृतम् । तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे ॥

[७ वीं क्रिया—यज्ञोपवीत]†

आचार्य—एक रङ्गा यज्ञोपवीत हाथ में लेकर । निम्नलिखित मन्त्र पढ़े ।

* अमुक के स्थान पर वर्ष, विक्रमी, शाका आदि दी जावे ।

† नोट—प्रायः पुरोहित एक जोड़ा यज्ञोपवीत पहना देते हैं । यह विधि के विरुद्ध है । अब कन्याओं तथा बधुओं के संस्कार प्रचलित हो गये हैं । यज्ञोपवीत इतना बड़ा न होना चाहिये कि बालक को पहनने में कठिनाई हो ।

ओं यज्ञोपवीतं, परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं
पुरस्तात् । आयुष्य मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं
बलमस्तु तेजः ॥ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवी-
तेनोपनह्यामि ॥

७ यज्ञोपवीत को बालक के गले में डाले और बाँये कन्धे पर
रखकर दाहिने हाथ के नीचे पहना दे ।

[८ वीं क्रिया—आचमन]

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा । [एक आचमन]

ओं अमृतोपिधानमसि स्वाहा । [दूसरा आचमन]

ओं सत्य यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।

तीसरा आचमन ।

[९ वीं क्रिया—अंग स्पर्श]

बायें हाथ की अंजली में जल भरे, फिर दाहिने हाथ की
अँगुलियों से भिन्न-भिन्न अंग जल से स्पर्श करो ।

ओं वाङ्मआस्येऽस्तु । (इससे मुँह) ।

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु । (इससे नाक) ।

ओं अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु । (इससे दोनों नेत्र) ।

ओं कर्णयोर्मे क्षोत्रमस्तु । (इससे दोनों कान) ।

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । (इससे दोनों बाहें) ।

ओं ऊर्वोर्मोऽग्नोजोऽस्तु । (इससे दोनों जाँघें) ।

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु ।

इससे सब शरीर पर जल छिड़क लें ।

[१० वीं क्रिया—प्रार्थना]

ओरेम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यज्ञद्रतं
आसुव ॥ १ ॥

(यजु० अध्याय ३० । मन्त्र ३ ॥)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीं धामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

(यजुः अ० १३ । मन्त्र ४ ॥)

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्राशेषं यस्य देवाः ।

यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥

(यजुः अ० २५ । मन्त्र १३ ॥)

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतो बभूव ।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

(यजु० अ० २३ । मन्त्र ३ ॥)

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च हृदा येन स्वःस्तमितं येन नाकः ।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥

(यजु० अ० ३२ । मन्त्र ६ ॥)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।

यत्कामारते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥

(ऋ० मन्त्र १० । सू० १२१ । मन्त्र १० ॥)

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद मुवनानि विश्वा ।

यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्ध्रैरयन्त ॥ ७ ॥

(यजु० अ० ३२ । मन्त्र १० ॥)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्ति विधेम ॥ ८ ॥

(यजु० अ० ४० । मन्त्र १६ ॥)

[११ वीं क्रिया—स्वस्तिवाचन]

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् । १ ।
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सुपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये । २ ।
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना । ३ ।
स्वस्तये वायुमुपव्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सवंगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः । ४ ।
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्तवृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पातृंहसः । ५ ।
स्वस्ति मित्रा वरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृषि । ६ ।
स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताम्रता
जानता सं गमेमहि । ७ ।
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । ते नो
रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । ८ ।
येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्तां आदित्यां अनुमदा स्वस्तये । ९ ।
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहदेवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये । १० ।
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिहृता दधिरे दिवि क्षयम् । तां
आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये । ११ ।

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वेदेवासो मनुषो यतिष्ठन ।
 कोवोऽध्वरं तु विजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये । १२ ।
 येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः । त
 आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्तुं सुपथा स्वस्तये । १३ ।
 य ईशिरे भवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः । ते
 नः कृतादकृतादेनसस्पर्धया देवासः पिपृता स्वस्तये । १४ ।
 भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम । आग्न
 मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये । १५ ।
 सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदिति सुप्रणीतम् ।
 दैवी नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥ १६ ॥
 विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अमिहुतः ।
 सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥ १७ ॥
 अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
 आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयांतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥ १८ ॥
 अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
 यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥ १९ ॥
 यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हि ते घने ।
 प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥ २० ॥
 स्वस्ति नः पथ्यासु घन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
 स्वस्ति नः पुत्रकृतेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥ २१ ॥
 स्वस्ति रिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभि या वाममेति ।
 सा नो अमा सो अरणो नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपाः ॥ २२ ॥
 (ऋ० मन्त्र १० । सू० ६३ । मन्त्र ३-१६ ॥)
 इषे त्वोज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय
 कर्मण आप्यायध्वमध्व्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा
 मा वस्तेन ईशत माघशश्वंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात वह्नीर्य ।
 जमानस्य पशून् पाहि ॥ २३ ॥ (यजु० अ० १ । मन्त्र १ ॥)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
 देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ २४ ॥
 देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम् ।
 देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे । २५ ।
 तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
 पूषा नो यथा वेदमामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । २६ ।
 स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
 स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । २७ ।
 भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गै
 स्तुष्टुवाग्ँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः । २८ ।
 अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सस्ति
 बर्हिषि । २९ ।
 स्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषाँहितः देवेभिर्मानुषे जने । ३० ।
 ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि विभ्रतः । वाचस्पतिर्बला
 तेषां तन्वो अद्य दधातु मे । ३१ ।

[१२ वीं क्रिया—शान्ति प्रकरण]

शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
 शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ । १ ।
 शन्नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शन्नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
 शन्नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शन्नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु । २ ।
 शन्नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शन्न उरूची भवतु स्वधामिः ।
 शं रोदसी बृहती शन्नो अद्रिः शन्नो देवानां सुहवानि सन्तु । ३ ।
 शन्नो अग्निज्योतिरनीको अस्तु शन्नो मित्रावरुणावस्विना शम् ।
 शन्नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः । ४ ।
 शन्नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृश्ये नो अस्तु ।
 शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः । ५ ।

शन्न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
 शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलापः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु । ६ ।
 शंनः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
 शं नः स्वरूपां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्बस्तु वेदिः । ७ ।
 शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु । शं नः
 पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः । ८ ।
 शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्त मरुतः स्वर्काः ।
 शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्बस्तु वायुः । ९ ।
 शं नो देवः सविता त्रायमाणाः शं नो भवन्तूषसो विभातीः
 शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः । १० ।
 शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
 शम भिषाचः शमु रातिषाचः शंनो दिव्याः पार्थिवाः शन्नो अप्याः । ११ ।
 शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
 शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु । १२ ।
 शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
 शं नो अपां नपात्येरुस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगांपाः । १३ ।
 इन्द्रोविश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । १४ ।
 शं नो वातः पवताश्च शं नस्तपतु सूर्यैः । शंनः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो
 अभि वर्षतु । १५ ।
 अहानि शं भवन्तु नः शंश्चरात्रीः प्रतिधीयताम् । शं न इन्द्राग्नी
 भवतामवोभिः शं नः इन्द्रावरुणा रातहव्या । शं न इन्द्रापूषणा
 वाजसातो शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः । १६ ।
 शं नो देवीरभ्य आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः । १७ ।
 द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोष-
 घयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
 सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि । १८ ।

(१३)

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्मुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम
शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रव्वाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् । १६ ।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमं ज्योतिषा
र्ज्यातिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । २० ।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।

यदपूर्वं यक्ष्मन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । २१ ।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।

यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । २२ ।

येनेदं भूतं सुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।

येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २३ ॥

यस्मिन्नुचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।

यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २४ ॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।

हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २५ ॥

(यजु० अ० ३४ । मन्त्र १—६ ॥)

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।

शं राजचोषधीभ्यः ॥ २६ ॥

(साम० उत्तराच्चिके० प्रपा० १ । मन्त्र १ ॥)

अभयं न करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उमे इमे ।

अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तराधरादभयं नो अस्तु ॥ २७ ॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्ष्वात् ।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥ २८ ॥

(अथर्व० कां० १९ । सू० १५ । मन्त्र ५, ६ ॥)

(१४)

[१३ वीं क्रिया—अग्नि जलाना और प्रज्वलित करना]

ओं भूर्भुवः स्वः—चमचे में कपूर रखकर जलते हुये दिये या दियासलाई से जलावे ।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवी देव यजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यादध्वे ॥
(यजु० अ० ३ । मन्त्र ५)

खड़े होकर कपूर अग्नि कुण्ड में रखना । फिर अगले मन्त्र से पंखा से अग्नि प्रदीप्त करना ।

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूत्तं
सथ्सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्येत्तरस्मिन् विश्वे
देवा यजमानश्च सीदत ॥

[१४ वीं क्रिया—३ समिधायें रखना]

[१] ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
वर्धस्व चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेना-
न्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥
इससे पहली समिधा ।

[२] ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा । इदमग्नये—इदन्न मम ॥

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे, इदन्नमम ।
दोनों मन्त्रों से दूसरी ।

(१५)

[३] ओं तन्त्वा समिद्धिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।
 बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा । इदमग्नयेऽङ्गिरसे—
 इदन्न मम । (इससे तीसरी) ।

[१५ वीं क्रिया—पाँच बार मन्त्र पढ़ कर घृत की पाँच आहुतियाँ दे]

ओं अयन्त इधम आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व
 चेद्ववर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥

[१६ वीं क्रिया—वेदी के चारों ओर जल छिड़कना]

यज्ञ कुण्ड के चारों ओर नाली बनावें और उसमें जल डालें ।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व । [इससे पूर्व] ।

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व । [इससे पश्चिम में] ।

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व । [इससे उत्तर में] ।

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय ।

दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः
 स्वदतु ॥ [इससे चारों ओर ।] ।

[१७ वीं क्रिया—घृत की आहुतियाँ]

ओं अग्नये स्वाहा । इदमग्नये—इदन्न मम ।

कुण्ड के उत्तर भाग में ।

(१६)

ओं सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदन्न मम ।
इससे दक्षिण भाग में ।

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।
इससे बीच में ।

ओं इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय इदन्न मम ।
इससे बीच में ।

घृत की आहुति निम्नलिखित मन्त्रों से देनी ।

ओं भूरग्नये स्वाहा । इदमग्नये—इदन्न मम ।

ओं भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे—इदं न मम ।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा । इमादित्याय—इदन्न मम ।

ओं भूभुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा । इदमग्नि-
वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ।

[१८ वीं क्रिया—अष्टाज्याहुति]

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवया-
सिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि
प्र मुमुग्ध्यस्मत स्वाहा ॥ इदमग्निवरुणाभ्यां, इदन्न
मम ॥ १ ॥

ओं स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्य उषसो
व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृलीकं सुहवो
न एधि स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्यां, इदन्न मम ॥ २ ॥

(१७)

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मूलय ।
स्वामवस्युराचके स्वाहा । इदं वरुणाय, इदन्न मम ॥ ३ ॥

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते
यजमानो हविर्भिः । अहेलमानो वरुणोह बोध्युरुशंस मा
र्त्त आयुः प्र मोषीः स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम ॥ ४ ॥

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता
महान्तः । तेषिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः
स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो
देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ॥ ५ ॥

ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिश्चस्तिपाश्च सत्त्वमित्वमयासि ।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं च स्वाहा ॥
इदमग्नये अयसे इदन्नमम ॥ ६ ॥

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं
अथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये
स्याम स्वाहा । इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च इदन्न
मम ॥ ७ ॥

ओं भवतं नः समनसौ सचेतसावुरेपसौ । मा
यज्ञं हिंसीष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य
नः स्वाहा ॥ इदं जातवेदोभ्यां, इदन्न मम ॥ ८ ॥

(१८)

[१६ वीं क्रिया—बालक भात की आहुतियाँ दे]

ओं भूभुवः स्वः । अग्न आयूषि पवस आसुवोर्ज-
मिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ॥ इदमग्नये
पवमानाय-इदन्न मम ॥१॥

ओं भूसुवः स्वः । अग्नि ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः
पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमा-
नाय-इदन्न मम ॥२॥

ओं भूभुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः
सुवीर्यम् । दधद्रयि मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमा-
नाय-इदन्न मम ॥३॥

ओं भूभुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा
जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम् । इदं प्रजायतये, इदन्न
मम ॥४॥

[२० वीं क्रिया—बालक घृत की आहुतियाँ दे]

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि
तच्छकेयम् । तेनर्घ्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ॥
इदमग्नये, इदन्न मम ॥१॥

ओं वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि
नच्छकेयम् । तेनर्घ्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ।
इदं वायवे—इदन्न मम ॥२॥

(१९)

ओं सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि
तच्छक्रेयम् । तेनर्घ्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ।
इदं सूर्याय—इदन्न मम ॥३॥

ओं चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि
तच्छक्रेयम् । तेनर्घ्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ।
इदं चन्द्राय—इदन्न मम ॥४॥

ओं व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि
तच्छक्रेयम् । तेनर्घ्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ।
इदमिन्द्राय, व्रतपतये इदन्न मम ॥५॥

ओं भूरग्नये स्वाहा इदमग्नये—इदं न मम ॥६॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥७॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा । इदमित्याय इदन्न
मम ॥८॥

ओं भूभुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा । इदमग्नि-
वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ॥९॥

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यून मिहाकरम् ।
अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां
समर्द्धयित्रै सर्वाग्निः कामान्तसमर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये
स्विष्टकृते, इदन्न मम ॥१०॥

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥११॥

(२०)

[२१ वीं क्रिया—बालक परिचय]

आचार्य उत्तर दिशा में बैठे मुख पूर्व की ओर हो । बालक उसके सामने बैठे मुख पश्चिम की ओर हो । बालक की ओर देख कर आचार्य मन्त्र पढ़े :—

ओं आगन्त्रा समगमहि प्र सु मर्त्य युयोतन । अरिष्टाः संचरेमहि स्वस्ति चरतादयम् ॥

बालक—ओं ब्रह्मचर्यमागामुप मा नयस्व ।

आचार्य—को नामासि ? (क्या नाम है)

बालक अपने नाम के आगे “नामा अस्मि” उत्तर दे । जैसे “धर्मदेव नामास्मि ।”

[२२ वीं क्रिया—पहली जलाञ्जलि]

आचार्य निम्नलिखित मन्त्र बोलकर बालक की दक्षिण हस्ताञ्जलि में जल भर कर अपनी अञ्जलि भी पानी से भर दे । एक परात या थाली नीचे रख ले जिससे पानी उसी में पड़े ।

आचार्य—ओं आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जं दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥१॥

ओं यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥२॥

ओं तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिव्वथ । आपो जनयथा च नः ॥३॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर अपने हाथ की अञ्जलि का पानी बालक की अञ्जलि में छोड़ के बालक का हाथ अँगूठे सहित पकड़ कर—

(२१)

ओं तत्सवितु वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम् । श्रेष्ठं
सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि ॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अंजलि का पानी नीचे रखी
थाली या परात में छुड़वा देवे ।

ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो बहिभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्यां हस्तं गृह्णाम्यसौ ॥

यहाँ बालक का नाम सम्बोधनान्त कहे “गृह्णामि धर्मदेव ।”

[२२ वी क्रिया—दूसरी जलाञ्जलि]

आचार्य निम्नलिखित मन्त्र बोलकर बालक की दक्षिण
हस्ताञ्जलि में जल भर कर अपनी अंजलि भी पानी से
भर दे ।

आचार्य—ओं आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जं
दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥१॥

ओं यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥२॥

ओं तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिव्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥३॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अपने हाथ की अंजलि का जल
बालक की अंजलि में छोड़ के बालक का हाथ अँगूठे सहित
पकड़ कर—

ओं तत्सवितु वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम् । श्रेष्ठं
सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि ॥

(२२)

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अंजलि का पानी नीचे थाली या परात में छुड़वा देवे ।

ओं सविता ते हस्तमग्रभीत, असौ ।

पहिली तरह बालक का सम्बोधनान्त नाम ले—“हस्तम-
ग्रभीत् धर्मदेव !”

[२४ वीं क्रिया—तीसरी जलाञ्जलि]

आचार्य निम्नलिखित मन्त्र बोलकर बालक की दक्षिण हस्ताञ्जलि में जल भरकर अपनी अंजलि भी पानी से भर कर—

आचार्य—ओं आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जं
दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥१॥

ओं यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः ।
उशतीरिव मातरः ॥२॥

ओं तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ।

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अपने हाथ का पानी बालक के हाथ में छोड़ दे, फिर बालक का हाथ अँगूठे सहित पकड़ कर—

ओं तत्सवितु बृणीमहे वयं देवस्य भोजनम् । श्रेष्ठं
सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि ॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर हाथ का पानी नीचे थाली या परात में छुड़वा देवे ।

ओं अग्निराचार्यस्तव, असौ ।

पहिली तरह से ही बालक का सम्बोधनान्त नाम ले यथा
“तव धर्मदेव !”

[२५ वीं क्रिया—सूर्य दर्शन]

आचार्य बालक के साथ सूर्य के सामने खड़ा हो जाय फिर मन्त्र पढ़कर बालक को सूर्य दर्शन करावे ।

ओं देव सवितरेष ते ब्रह्मचारी ते गोपाय समा-
मृत ॥१॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम
शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं
प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च
शरदः शतात् ॥२॥

[२६ वीं क्रिया—आचार्य की प्रदक्षिणा]

आचार्य यज्ञ मण्डप में आकर उत्तर में बैठ जाय फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

ओं युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान्
भवति जायमानः । ओं सूर्यस्याव्रतमन्वावर्त्तस्व असौ ।

असौ के स्थान पर बालक का सम्बोधनान्त नाम ले । यथा
“तव धर्मदेव !”

बालक आचार्य की प्रदक्षिणा करके उसके सामने बैठे ।

[२७ वीं क्रिया—अङ्गस्पर्श]

आचार्य अपने दाहिने हाथ से बालक का दाहिना कन्धा
स्पर्श करे । फिर अपने हाथ को बालक के दुपट्टे से ढक ले
मन्त्र पढ़े ।

(२४)

ओं प्राणानां ग्रन्थिरसि मा विस्रसोऽन्तक इदं ते
परिददामि, अमुम्* ॥

ओं अहुर इदं ते परिददामि, अमुम्* ॥

(मन्त्र से बालक के उदर का स्पर्श ।)

ओं कृशान इदं ते परिददामि, अमुम्* ॥

(मन्त्र से बालक के हृदय का स्पर्श ।)

ओं प्रजापतये त्वा परिददामि, असौ* ॥

(मन्त्र से बालक के दक्षिण स्कन्ध का स्पर्श ।)

ओं देवाय त्वा सवित्रे परिददामि, असौ* ॥

(मन्त्र से बायें हाथ से बालक के बायें कन्धे का स्पर्श
करके बालक के हृदय पर हाथ रखकर । निम्नलिखित मन्त्र
पढ़े)

ओं तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसाः
देवयन्तः ॥

[२८ वीं क्रिया—प्रतिज्ञा]

एक दूसरे के दक्षिण हृदय पर, दक्षिण हाथ रखकर—

आचार्य तथा बालक—ओं मम व्रते ते हृदयं
दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमना
जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।

* 'असौ' तथा 'अमुः' दोनों स्थानों पर बालक का नाम
'सम्बोधनान्त' तथा 'द्वितीयान्त' उच्चारण करे । यथा—
'धर्मदेव ! धर्मदेव'

(२५)

अर्थ :—आचार्य—हे बालक तेरे हृदय को मैं अपने आधीन करता हूँ । तेरा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल सदा रहे और तू मेरी वाणी को एकाग्र मन से प्रीति पूर्वक सुनकर मेरे उपदेशानुसार कार्य कर । बृहस्पति परमात्मा आज से तुम्हें मेरा अनुगामी बनाये ।

शिष्य—हे आचार्य ! उत्तम शिक्षा और विद्या की उन्नति के लिये मेरा हृदय आप के हृदय के आधीन रहे । मेरा मन आपके मन के अनुकूल सदा रहे । आप मेरे कथन को एकाग्रमन से सुनिये । परमात्मा मुझे आज से आपका अनुगामी बनाये ।

[२६ वीं क्रिया—आशीर्वाद]

आचार्य—को नामाऽसि (तुम्हारा क्या नाम है ?)

बालक—अहं धर्मदेव नामा अस्मि ।

आचार्य—कस्य ब्रह्मचार्यसि (किसके ब्रह्मचारी हो)

बालक—भवतः (आपके) ।

आचार्य—इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यस्तव असौ ॥

(असौ के स्थान पर बालक का सम्बोधनान्त नाम ले) ।

ओं कस्य ब्रह्मचार्यसि प्राणस्य ब्रह्मचार्यसि कस्त्वा कमुपनयते काय त्वा परिददामि ॥ १ ॥ ओं प्रजापतये त्वा परिददामि । देवाय त्वा सवित्रे परिददामि । अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि । द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि । सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै ॥

वेदारम्भ अथवा गायत्री मन्त्र पाठ

[नोट—वर्तमान समाज व्यवस्था के अनुसार बालक को गुरुकुल में नहीं जाना है । अतः गायत्री मन्त्र के उपदेश मात्र से ही वेदारम्भ की क्रिया समाप्त होनी है । अतः उपनयन के उपरान्त ही कर देनी चाहिये ।]

[३० वीं क्रिया—अग्नि संचय और वेदी प्रदक्षिणा]

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर बालक वेदी की अग्नि को एक लकड़ी या चमचे से इकट्ठा करे फिर वेदी की प्रदक्षिणा करे ।

बालक—ओं अग्नेः सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु । ओं यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ओं एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ओं यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ओं एवमह मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥

[३१ वीं क्रिया—तीन बार पढ़कर तीन समिधाहुति]

इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर तीन समिधाओं की आहुति दे ।

बालक—ओं अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे । यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसऽएवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभि ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्य हंसान्य निराकरिष्णु र्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासथं स्वाहा ।

[३२ वीं क्रिया—दूसरी बार अग्नि संचय तथा प्रदक्षिणा]

यह मन्त्र पढ़कर वेदी की अग्नि को दूसरी बार इकट्ठा करे और वेदी की प्रदक्षिणा करे ।

बालक—ओं अग्नेः सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु । ओं यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ओं एवं मां सुश्रवः सुश्रवसं कुरु । ओं यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ओं एवमह मनुष्याणां वेदस्य निधिरो भूयासम् ।

[३३ वीं क्रिया—वेदी के चारों ओर जल छिड़कना]

बालक—ओं अदितेऽनुमन्यस्व । [इससे पूर्व] ।

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व । [इससे पश्चिम में] ।

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व । [इससे उत्तर में] ।

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञवर्ति भगाय दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ [इससे चारों ओर ।] ।

[३४ वीं क्रिया—अग्नि तापना]

बालक पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठ के, थोड़ा सा जल लेकर दोनों हाथ तपावे और निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

ओं तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ॥१॥

ओं आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ॥२॥

ओं वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ॥३॥

ओं अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ॥४॥

ओं मेधां मे देवः सविता आदधातु ॥५॥

ओं मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ॥६॥

ओं मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥७॥

[३५ वीं क्रिया—अंग स्पर्श]

बालक जल से अंग स्पर्श करे ।

ओं वाक् चं म आप्यायताम् । (इससे मुख)

ओं प्राणश्च म आप्यायताम् । (इससे नासिका)

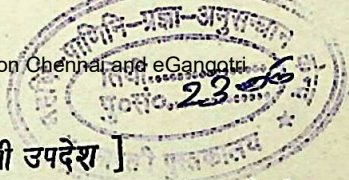
ओं चक्षुश्च म आप्यायताम् । (इससे नेत्र)

ओं श्रोतश्च म आप्यायताम् । (इससे कान)

ओं यशोबलश्च म आप्यायताम् । (बाहु स्पर्श करे)

[३६ वीं क्रिया—प्रार्थना]

बालक—ओं मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो
दधातु । मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु ॥
मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु । यत्ते अग्ने
तेजस्तेनाहं तेजस्वी भूयासम् । यत्ते अग्ने वर्चस्तेनाहं
वर्चस्वी भूयासम् । यत्ते अग्ने हरस्तेनाहं हरस्वी भूयासम् ।
मन्त्र पढ़कर ।



[३७ वीं क्रिया—गायत्री उपदेश]

बालक कुण्ड के उत्तर में जाकर, घुटने टेक आचार्य के सम्मुख पश्चिमाभिमुख बैठकर नम्रतापूर्वक कहे ।

अधी हि 'भूः सावित्रीं भो अनुब्रूहि ।'

आचार्य दुपट्टे से अपने तथा बालक के कन्धे को ढक कर, बालक के दोनों हाथ की अंगुलियों को पकड़ कर पाठ करावें ।

प्रथमवार—ओं भूभुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यम् ।

द्वितीयवार—ओं भूभुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

तृतीयवार—ओं भूभुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

मन्त्रार्थ

आचार्य—(ओ३म्) वह परमात्मा जिसका मुख्य नाम 'ओ३म्' है; जो (भूः) प्राणों का भी प्राण, (भुवः) सब दुखों से छुड़ाने हारा, (स्वः) सुख स्वरूप और अपने उपासकों को सब सुख की प्राप्ति कराने हारा है, उस (सवितुः) सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक समग्र ऐश्वर्य के दाता (देवस्य) कामना करने योग्य सर्वत्र विजय कराने हारे परमात्मा का जो (वरेण्यम्) अतिश्रेष्ठ ग्रहण और ध्यान करने योग्य (भर्गः) सब क्लेशों को भस्म कराने हारा पवित्र शुद्ध स्वरूप है (तत्) उसको हम लोग (धीमहि) धारण करें । (यः) परमात्मा (नः) हमारी (धियोः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) उत्तम गुण कर्म स्वभावों में प्रेरित करे ।

(३०)

[३८ वीं क्रिया—मेखला धारण]

यह मन्त्र पढ़कर आचार्य बालक की कमर में मेखला बांधे ।

आचार्य—ओं इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वरुणं पवित्रं
पुनती म आगात् । प्राणापानाभ्यं बलमादधाना स्वसा
देवी सुभगा मेखलेयम् ॥

[३९ वीं क्रिया—वस्त्रदान]

आचार्य ब्रह्मचारी को वस्त्रदान देकर यह मन्त्र पढ़े—

ओं युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान्
भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो
मनसा देवयन्तः ॥

[४० वीं क्रिया—दण्ड धारण]

आचार्य—हाथ में दण्ड ले खड़ा रहे ।

बालक मन्त्र बोलकर आचार्य के हाथ से दण्ड ले लेवे ।

ओं यो मे दण्डः परापतद्वह्नायसोऽधि भूम्याम् ।
तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

[४१ वीं क्रिया—उपदेश]

आचार्य के आदेश देने पर बालक का पिता निम्न उपदेश देवे ।
आज से तू ब्रह्मचारी है । भोजन के पूर्व तथा सन्ध्योपासनादि
के समय आचमन अवश्य किया कर । सदा अच्छे काम किया
कर । दिन में न सो । वेद तथा धार्मिक ग्रन्थों का पाठ नित्य

कर। आचार्य के धर्म युक्त उपदेशों को सुन और उन पर चल। उनकी बुरी बातों का अनुकरण न कर। क्रोध न कर, झूठ न बोल। कोई ऐसा काम न करो जिससे तुम्हारे शरीर की शक्ति घट जाय या तुम्हारा तेज नष्ट हो जाय। स्त्री जाति को मा और बहिन के समान समझ। बुरे लड़कों के साथ न रह। नाच गान में रुचि न ले। फैशन से दूर रह, सादगी से रह। अंडा, सिगरेट, मद्य, मदिरा आदि नशीली वस्तु, अधिक मिर्च, खटाई आदि का प्रयोग न कर। अधिक स्नान, अधिक भाजन न कर, अधिक न सो, न अधिक रात में दर तक जाग। किसी की निन्दा न कर, लोभी न बन। घर का या और किसी वस्तु का मोह न कर, निडर बन, शोक न कर। प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौच दातौन, स्नानादि से निवृत्त हो सन्ध्योपासन तथा व्यायामादि नित्य कर। सुशील बन, नम्र बन, सभा के नियमों को सीख। बड़ों के सम्मुख कम बात कर। उचित रीति से बलवर्द्धक भोजन करते हुये, शारीरिक तथा नित्य समय पर सन्ध्योपासनादि शुभकर्म कर। आत्मिक बल को बढ़ाते हुये, विद्याभ्यासी बन।

[४२ वीं क्रिया—भिक्षा]

बालक यज्ञ कुण्ड की परिक्रमा करके जो अंगोष्ठा उसको मिला है उसकी झोली बना ले। झोली हाथ में ले, यज्ञ कुण्ड के पश्चिम भाग में खड़े माता, पितादि जो देना चाहें, उन्हीं से 'मातर्मे भिक्षां देहि', 'पितर्मे भिक्षां देहि' वाक्य बोलकर भिक्षा माँगे और जो भिक्षा मिले आचार्य के सामने रखे। आचार्य उस भिक्षा में से थोड़ी सी भिक्षा लेकर शेष सब बालक को दे देवे।

[४३ वीं क्रिया—स्थालीपाक (भात) आहुति]

आचार्य तथा बालक भात में धृत मिलाकर एक-एक मन्त्र से एक-एक आहुति दे—

ओं सदसस्पतिमदमुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनि मेघा मयासिषथं स्वाहा । इदं सदसस्पतये इदञ्च मम ॥ १ ॥

ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयातं, स्वाहा । इदं सवित्रे—इदञ्च मम ॥ २ ॥

ओं ऋषिभ्यः स्वाहा । इदं ऋषिभ्यः—इदञ्च मम ॥ ३ ॥

[४४ वीं क्रिया—आशीर्वाद]

आचार्य—आयुष्मान् विद्यावान् भव सौम्य ॥

सब लोग—हे बालक ! त्वं ईश्वर कृपया विद्वान् शरीरात्म-
बलयुक्तः कुशली वीर्यवानरोगः सर्वाविद्या अधीत्यास्मान् दिहन्तुः
सन्नागभ्याः ।

[४५ वीं क्रिया—हविष्य (भात) खाना]

बालक यज्ञ से बचे हुये भात तथा अन्य भिक्षा में मिले
स्वादिष्ट पदार्थों का सेवन करे ।

शान्ति पाठ

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिः
ओषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म
शान्तिः सर्वज्ञं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिः रेधि ।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

मुद्रक—कला प्रेस, प्रयाग ।

श्री विश्वप्रकाश द्वारा लिखित पुस्तकें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Life and Teachings of Svami Dayanand ४'००
Vedik Ceremonies (English Translation
of Sanskar Vidhi) In Press ५'००

विधवाओं का इन्साफ २'५०

पाक विज्ञान २'००

स्त्रियों के रिश्ते २'००

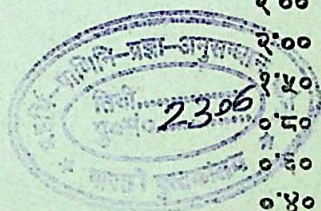
महात्मा नारायण स्वामी २'००

आर्य समाज के निर्माता १'५०

बहिनों की सीख ०'८०

महिला सत्यार्थ प्रकाश ०'६०

स्वामी दयानन्द (बाल जीवनी) ०'४०



संस्कार माला

ऋषि दयानन्द की अमर पुस्तक संस्कार विधि पर आधारित

आर्य विवाह पद्धति	मू० ७५ पैसे
नामकरण संस्कार (५०० नामों की सूची सहित)	४० पैसे
अन्नप्राशन तथा कर्णवेध संस्कार	३० पैसे
उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार	४० पैसे
चूड़ाकर्म या मुंडन संस्कार	३० पैसे
सूतक संस्कार	४० पैसे
वैदिक सत्संग (भजन, संध्या, हवन)	४० पैसे

इस माला की निम्न विशेषतायें हैं :—

- (१) संस्कार का समय
- (२) आवश्यक वस्तुओं की सूची
- (३) संस्कार के अंग, पूरी पद्धति व्याख्या सहित
- (४) जो मंत्र जितनी बार आवश्यक है उतनी बार छपा है

पता—वैदिक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद—३

की दो विचारोत्तेजक नवी

गं

श्री उपाध्याय जी द्वारा आजपूर्ण
सिद्धान्तों की सुन्दर माँकी इसमें
दार्शनिक भाषा शैली अत्यन्त मन म
मनोवैज्ञानिक है।

पूजा पूजा

मूर्ति पूजा पर अनेक पुस्तकें इससे पूर्व लिखी गई हैं, पर
यह नवीन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई है। प्रस्तुत
पुस्तक श्री उपाध्याय जी की एक अमूल्य पुस्तक है, जो मूर्ति
पूजा की गुत्थियों को सरलता से स्पष्ट करती और पाठकों के
अन्तःकरण पर मार्मिक चोट करती है। पूजा क्या है ?
पूजा कैसी होनी चाहिये ? पूजा का क्या स्वरूप है ?
यह बड़ी विशदता से दिखाया गया है। मू० ७५ पैसे

श्री विश्वप्रकाश द्वारा लिखित पुस्तकें

आर्य विवाह पद्धति (अर्थ सहित)	मू० ७५ पैसे
मृतक संस्कार	४० पैसे
आर्य समाज के निर्माता	१.५०

श्री चन्द्रिका प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तकें

रामायण-अरण्य किष्किन्धा सुन्दर कांड	मू० १.००
धर्म का मर्म	३० पैसे
गागर में सागर	२० पैसे
सत्य जीवन आदर्श	४० पैसे